सहरिया जनजाति का आर्थिक–सामाजिक विकास आजीविका के दृष्टिकोण से

*डॉ. पुष्पा तातेड़

सहरिया जनजाति राजस्थान के बांरा जिले में स्थित तहसील किशनगंज व शाहाबाद में मुख्यत निवास करती है। यह राज्य की कुल जनजातीयों का 0.99 प्रतिशत है। सहरिया जनजाती की जनसंख्या राजस्थान में 1.11 लाख है, जो क्षैत्र की कुल जनसंख्या का 37.44 प्रतिशत है। सहरिया शब्द की उत्पति फारसी भाषा के 'सहर' शब्द से हुई है जिसका अर्थ जंगल होता है। कर्नल जेम्स टॉड ने अपनी पुस्तक **"Travels in western india"** में सहरिया जनजाति को भीलो की एक शाखा माना है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और विकास का क्रम निरन्तर चलता रहता है। समाज के प्रत्येक व्यक्ति का सर्वोच्च विकास सरकार व समाज का दायित्व होता है। भारतीय समाज में विभिन्न जनजातियों का संगम हुआ है। भारतीय प्ररिप्रेक्ष्य में जनजातियो की अपनी विशिष्ट पहचान है। ये भौगोलिक रूप से निश्चित भू–भाग (जंगल, पहाड़) आदि में निवास करते है। समाजशास्त्री इन्हे वंचित वर्ग से संबोधित करते है। अधिकांश जनजातिया वन क्षैत्रो में निवास करती है और इनकी आजीविका वन उत्पाद अथवा पशु पालन पर निर्भर करती है। इनमें से कुछ समुदाय आदिम ढंग की विशेषताओं वाले है। इन आदिम समुहों की जनसख्या, साक्षरता का निम्न स्तर कृषि पूर्व स्तर की तकनीकी क्षमता, आर्थिक रूप से कमजोर आदि विशेषताए विद्यमान है। सहरिया आदिम सुमदाय का एक ऐसा ही विशेष रूप से कमजोर जनजातिय समुह है

औपनिवेशिक काल में आदिवासी समुहों के लिए केवल सुरक्षात्मक उपाय प्रदान करने के अलावा उनकी सामाजिक आर्थिक स्थितियों मे सुधार के लिए कुछ विशेष प्रयास नही किए गये। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात कुछ विशेष प्रयास किये गये यथा विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं का संचालन जो व्यक्तिगत व सामुदायिक विकास से संबंधित थी, साथ ही अनुसुचित जनजातियों को रोजगार के समान अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से राज्य प्रायोजित शिक्षण संस्थाओं तथा सरकारी सेवाओं में (आरक्षण की व्यवस्था) की गई।

सामान्य सहरिया किसी गांव या शहर के आस पास पृथक समूह बनाकर रहना पसन्द करते है। जंगलो में उँची पहाड़ियो की बजाय समतल मैदानी भागों में परम्परागत रूप से समूहों के मकान बनाकर रहते है। कभी कभी ये पहाड़ों पर भी मकान बना लेते है। मकानों के बसावट तीन और से अंग्रेजी के उल्टे यू आकार में होती है। एक और से आने जाने का रास्ता होता है। बीच में चौंक होता है, जिसमें बंगला यानी अतिथि घर होता है। इनके गांव की बसाहट का कोई निश्चित आकार प्रकार नही होता है। बसावट को ही सहराना कहा जाता है। सहराना के बीच एक बड़ा मकान होता है, इसे बंगला कहा जाता है। इसमें जाति पंचायत की बैठक आयोजन की जाती है।

सहरिया जनजाति का मुख्य भोजन ज्वार, मक्का, गेहूँ, बाजरा है। जो इसकी मोटी रोटी या चपाती बनाते है। ये जनजाति महुआ को उबाल कर खाने के शौकीन होते है। डॉ. टी.बी. नायक के अनुसार – "प्राकृतिक रूप से उगने

वाले कंद, मूल, फल, हरी पत्तिया खाने का सहरियाओं का सबसे प्रिय शौक है। वनस्पतियों का विस्तृत ज्ञान प्रत्येक सहरिया को पुरखों से विरासत में मिला है।"

सहरियाओं का जीवन स्तर अत्यंत साधारण है। भौतिक साधनों का अभाव है अथवा इसके प्रयोग से अनभिज्ञ है। पौष्टिक भोजन की कमी से एवं शरीरिक स्वच्छता के अभाव के कारण विभिन्न बीमारियों व रोगों से ग्रसित रहते है।

सहरिया समुदाय में आर्थिक उपार्जन के लिये कोई खास उद्योग या परम्परागत संसाधनों का विकास नही हो पाया है। परम्परागत धन्धे के रूप में कृषि, मजदूरी, शिकार, वनस्पति संग्रहण, महुआ, तेंदूपत्ता, सुखी लकड़ी को एकत्रित करना व बेचना प्रमुख है।

आज का सहरिया आर्थिक संकट से गुजर रहा है। सभी सहरियाओं के पास न तो कृषि भूमि है, और है भी तो आदिम परम्परागत प्रकार से की जाने वाली कृषि उपज कम है। जिससे ये परिवार का ही भरण पोषण करने में भी असमर्थ है। शहरी सहरियाओं ने जरूर कल–कारखानों में काम करना शुरू किया है। सहरियाओं का सबसे महम्वपूर्ण परम्परागत आर्थिक आधार है, जंगल से जड़ी–बूटी इक्टठी करना और बेचना। इन कार्यो में सहरियाओं को युगों से कुशलता प्राप्त है। सहरिया इन जड़ी बूटी से किसी खास प्रकार की दवाई बनाने में असमर्थ है। इसलिए ये इन जड़ी बूटी को सस्ते दामों में ही लोगों को बेच देते है। अपने वनस्पति ज्ञान की उपयोगिता से अनभिज्ञ सहरिया आर्थिक शोषण का शिकार आसानी से हो जाते है। वर्षा के दिनों में अपों की पत्ती, क्लों की पत्ती, बड़ी बिलैया, छोटी बिलैया के फूल और पत्ते बैल, बिलौरा की बेल, टोकरी बनाना आदि सहरिया के परम्परागत धन्धे है।

राजस्थान में बसने वाली आदिवासी जनजाति सहरिया अब तक अपनी बदहाली के लिए सुर्खियों में आती रही है। 1998 में पुरे देश में सहरिया आदिवासियों के भूख की वहज से घास की रोटी खाने की खबर चर्चित हुई थी। उस दौरान सहरिया क्षैत्र में पड़े अकाल की वजह से जनजाती के लोगो की मौत का खामियाजा भुगतना पड़ा था। मगर पूरी तरह प्राकृतिक संसाधनों पर जीवनयापन करने वाली जनजाति की स्थिति अब बदल रही है। राज्य के बांरा और झालावाड़ जिलों में इस आदिवासी समुह ने अब प्रकृति को ही आय का जरिया बना लिया है।

एक अध्ययन के अनुसार बीची ग्राम पंचायत के घैसुआ गांव में स्थानीय सहरिया कृषक को आंवला, अमरूद, अनार, आम से सालाना 5 लाख रूपये तक की आय हो रही है। बीलखेड़ा डांग पंचायत की चौराखाड़ी गांव निवासी शेसराम की पत्नि वीझाबाई को टमाटर, प्याज, पालक से अच्छा मुनाफा मिल रहा है। शाहबाद ब्लॉक के मटियाखरा गांव निवासी सोनीराम ने टमाटर, मिर्ची, बैगंन से मुनाफा कमाना शुरू किया है। यघपि यह कुछ उदाहरण मात्र है, वास्तव में अब भी बहुत कुछ किया जाना बाकी है।

सहरिया जनजाती अपने खान–पान और रहन–सहन में सिर्फ अधिकतर प्राकृतिक चीजों का इस्तेमाल करती है। इसलिए अकाल जैसी किसी भी प्राकृतिक आपदा के समय जीवनयापन मुश्किल हो जाता है। सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं के प्रयासो से अब प्रकृति से जुड़ाव को ही सहरिया जनजाती के आय का जरीया बनाया जा रहा है।

वर्तमान में राजीविका में लघु–ऋण, वन उपज के विक्रय से इन महिलाओं की आर्थिक स्थिति उन्नत करने का सक्रिय प्रयास कर रहा है। यह संगठन स्वंय सहायता समूह के माध्यम से अल्प बचत कर, विशेष राजकीय पैकेज व नवीन आत्मनिर्भरता प्रदान कर रहा है। राजीविका ने पोषण वाटिका स्थापित करवा कर, स्थानीय उत्पाद की खेती व पोषण को प्रोत्साहित कर रहा है साथ ही बकरी पालन मुर्गीपालन आदी व्यवसाय हेतु अति न्यून दर पर ऋण

उपलब्ध करवा कर सहरिया जनजाति की आर्थिक स्थिति उन्नत करने का प्रयास कर रही है।

साथ ही राजीविका ने सहरिया क्षैत्र में स्थानीय हस्तशिल्प निर्माण को संबल प्रदान करने हेतु समुह में वन उपज से निर्मित उत्पाद को आधुनिक रंग देकर, उनकी वास्तविक बाजार कीमत दीलवाने का प्रयास कर रही है। स्थानीय वन उपज जैसे शहद को राजसखी ब्रांड से बाजार में विक्रय कर महिलाओं को आर्थिक व सामाजिक संबल प्रदान कर रही है। वर्ष 2021 से बैंक सखी, कृषि सखी, पशु सखी के रूप मेंस्थानीय शिक्षित बालिकाओं को रोजगार प्रदान कर उन्हे सशक्त कर समाज में आगे लाने का कार्य कर रही है।

जनजाति सुमदाय द्वारा वन क्षैत्र में पैदा होने वाली लघुवन, कृषि, औषधीय तथा उद्यानिकी उपजो एवं अन्य उत्पादो का संग्रहण कर उनका मूल्य संवर्धन के द्वारा उचित मूल्य दिलवाये जाने के उददेश्य से जनजाती कार्य मंत्रालय भारत सरकार तथा ट्राइफेड के माध्यम से वन–धन विकास कार्यक्रम वर्ष 2018–19 में सम्पूर्ण भारत में लागू किया गया है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत जनजाति समुदाय के निवास स्थान के निकटस्थ प्रारम्भ किये जाने वाले 300 सदस्यीय वनधन विकास केन्द्र कलस्टर का गठन औसतन 20 सदस्यो के 15 स्वंय सहायता समुहो के माध्यम से किया जा रहा है। जिसमें जनजाती समुदाय से न्युनतम 60 प्रतिशत सदस्य होना आवश्यक है।

योजना के प्रारम्भ में राज्य जनजाति उपयोजना तथा सहरिया क्षैत्र में कुल 27 वन–धन विकास केन्द्र कलस्टर की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है। इनमें 6 केन्द्र प्रारम्भ हो चुके है। राजीविका के माध्यम से संचालित वन–धन विकास केन्द्र कलस्टर मगवास द्वारा लगभग 75 क्विंटल हर्बल गुलाल निर्मित की जाकर होली के अवसर पर विपणन किया गया है।

राजीविका परियोजना के अन्तर्गत बड़ी सख्या में स्वंय सहायता समुह सहरिया क्षैत्र में पहले से गठित है। साथ ही वन विभाग द्वारा इस क्षैत्र में वन सुरक्षा एवं प्रबंधन समितियो का गठन किया जा चुका है। उक्त दोनो को मिलाकर वन–धन विकास केन्द्रो का गठन किया गया है। प्रत्येक वन–धन विकास केन्द्र का गठन किया जाकर इसके लिए पृथक से बैंक खाता खोला जाना आवश्यक है।

वन–धन विकास केन्द्रो के सदस्यो को उनके सामान के भण्डारण, प्रोसेसिंग, प्रशिक्षण इत्यादी के लिए एक भवन उपलब्ध करवाया जा रहा है, जो संबंधित क्षैत्र के अनुपयोगी भवन हो सकते है। वन–धन विकास केन्द्रो की स्थापना पर लगभग 1 लाख रू. प्रति स्वंय सहायता समुह की दर से कुल 15 लाख रू. व्यय किया जाना प्रस्तावित है। इसके अतिरिक्त कार्यशील पूंजी के रूप में 10 लाख रूपये अतिरिक्त उपलब्ध करवाये जा रहे है। वन–धन विकास केन्द्र के स्तर पर प्रबंधन समिति वन उपज का लेखा करवाने के साथ, उक्त की बिक्री व इसके मूल्य संर्वधन के लिए आवश्यक कार्यवाही कर रही है।

उक्त अनुसार राजीविका सहरिया क्षैत्र के विकास व आर्थिक स्थिति उन्नत करने हेतु स्थानीय आदिवासी नेतृत्व के साथ एक सजग प्रयास कर रहा है। जो वन उपज का वास्ताविक मूल्य दिलवाने के साथ मूल्य संर्वधन हेतु कार्य कर रहा है। उक्त आर्थिक संबल से क्षैत्र में विशेषकर महिलाओं में नेतृत्व क्षमता का विकास हो रहा है। यह धरातल पर किये जा रहे प्रयासों में सवोत्कृष्ट है। इस प्रकार राजीविका के विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से क्षैत्र के आर्थिक विकास, महिला नेतृत्व, आधुनिकता व सामाजिक विकास को गति प्रदान करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निवर्हन किया है।

सहरिया आदिम जनजाती के व्यक्तियों में स्वास्थ्य के प्रति चेतना जाग्रत करने एवं उनके स्वास्थ्य की देखभाल के लिए प्रेरित करने हेतु सी.सी.डी. योजनान्तर्गत क्षय नियन्त्रण कार्यक्रम हेतु 200 सहरिया स्वास्थ्य कर्मी (महिला) वर्तमान में टीकाकरण, परिवार कल्याण, नशा मुक्ति हेतु ए.एन.एम. के साथ मिलकर कार्य कर रही है। उक्त

रोजगार निश्चय ही स्वास्थ्य जागरूकता के साथ आर्थिक विकास में सहभागी होगा।

सहरिया क्षैत्र में युवाओं के कौशल विकास हेतु, राजस्थान कौशल एवं आजीविका निगम, जयपुर के सहयोग से जनजाती युवक/युवतियो को रोजगार परक लघु कौशल प्रशिक्षण दिया जा रहा है। उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत 175 मॉड्यूल में 33 सेक्टर में विभिन्न पाठ्यक्रम यथा कम्प्यूटर हार्डवेयर, सिक्यूरिटी, गारमेंट, ऑटोमोबाइल सेक्टर, सूचना–प्रौद्योगिकी, नर्सिग इत्यादी में प्रशिक्षण दिया जाकर लाभार्थियों को रोजगार – स्वरोजगार से जोड़ा जा रहा है।

आर्थिक विकास के चरण में सहरिया वर्ग को अपनी भूमी पर मत्स्य बीज पालन हेतु, मत्स्य बीज पालन नर्सरी निर्माण के माध्यम से आय का अतिरिक्त साधन का सृजन किया जा रहा है।

उक्त विवरण अनुसार सरकार के स्तर से सहरिण जनजाति के विकास हेतु यद्यपि सजग प्रयास किये जा रहे है लेकिन सर्वोच्च कल्याण, समेकित विकास की अवधारणा में भौतिक विकास के साथ शैक्षणिक विकास से जुड़ी योजनाओं में अपेक्षित रूप से अधिक कार्य करने की महत्ती आवश्यकता है।

*सहायक प्रोफेसर (समाजशास्त्र)
राजकीय कन्या महाविद्यालय
ब्यावर (राज.)

सन्दर्भ सूची –

1. रसेल और हीरालाल, द ट्राइब्स एण्ड कास्ट्स ऑफ द सेन्ट्रल प्रोविनेस ऑफ इण्डिया
2. शर्मा, आन्नद कुमार, सहरिया जनजाति स्पोर्ट पब्लिकेशन, नई दिल्ली
3. पटेल, एस (1991), ट्राइब्ल एजुकेशन इन इण्डिया, मित्तल पब्लिकेशन, नई दिल्ली